राजस्थान सरकार

पंच गौरव कार्यक्रम

जिला पुस्तिका दौसा

जिले के चयनित पंच गौरव

एक जिला –एक उत्पाद
(पत्थर के उत्पाद)

एक जिला –एक उपज
(सौंफ)

एक जिला–एक खेल
(फुटबॉल)

एक जिला–एक वनस्पति
(ढाक के वृक्ष)

एक जिला–एक पर्यटन स्थल
(मेहंदीपुर बालाजी मंदिर)

जिला प्रशासन, दौसा

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

देवेन्द्र कुमार
जिला कलक्टर एवं
जिला मजिस्ट्रेट दौसा

संदेश

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियॉ हैं। इस कारण यहां अलग–अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां पाई जाती है। राज्य के विभिन्न जिलों में अलग–अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। पर्यटन व खेल की दृष्टि से भी प्रत्येक जिले की एक अलग पहचान है ।

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष की विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/ स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक व आर्थिक पहचान दी जा सकती है।

प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में पंच गौरव कार्यक्रम शुरू किया गया है। दौसा जिले में उसकी विरासत एवं स्थिति को ध्यान में रखते हुए पंच गौरव के रूप में एक जिला– एक उत्पाद स्टोन आर्टिकल, एक जिला –एक उपज सौंफ, एक जिला –एक वनस्पति ढाक, एक जिला –एक पर्यटन स्थल मेहंदीपुर बालाजी तथा एक जिला –एक खेल फुटबॉल को शामिल किया गया है।

जिला स्तर पर चयनित पंच गौरव के संवर्धन एवं विकास हेतु जिला स्तरीय समिति का गठन कर विस्तृत कार्य योजना तैयार कर राज्य स्तर पर प्रेषित कर दी गई है मैं आशा करता हूं कि पंच गौरव कार्यक्रम में जिले की आर्थिक पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण व संवर्धन हो सकेगा।

(देवेन्द्र कुमार)

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	दौसा जिला : एक परिचय	5
2	दौसा जिला एक दृष्टि में	6
3	पंच गौरव कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय एवं उद्देश्य	7–8
4	जिला स्तरीय समन्वय समिति का गठन एवं कार्य	9–10
5	एक जिला – एक उत्पाद स्टोन आर्टिकल	11–13
6	एक जिला – एक उपज सौंफ	14–15
7	एक जिला – एक वनस्पति ढाक	16–18
8	एक जिला – एक खेल फुटबाल	19–23
9	एक जिला– एक पर्यटन मेहन्दीपुर बालाजी	24–26
10	प्रस्तावित कार्ययोजना (सारांश)	27–28

दौसा जिला : एक परिचय

देवगिरी पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित देवनगरी के नाम से विख्यात दौसा जिला '25.33' से '27.33' उत्तरी अक्षांश के मध्य एवं '76.50' से 76.90' पूर्वी देशान्तर के मध्य राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित है। दौसा एक ऐतिहासिक नगरी है जिसे ढूंढाड राज्य की प्रथम राजधानी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दौसा कछवाहा राजाओं की राजस्थली रही है। कछवाहा राजवंश श्री राम के पुत्र कुश के वंशज बताये जाते है।

10 अप्रेल,1991 को जयपुर जिले से चार तहसीलों दौसा, सिकराय, बसवा एवं लालसोट को पृथक कर दौसा जिले का गठन हुआ। 15 अगस्त, 1992 को सवाईमाधोपुर जिले की महुआ तहसील को दौसा जिले में सम्मिलित किया गया। दौसा जिला मुख्यालय राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 21 पर जयपुर से आगरा की ओर 55 किमी की दूरी पर स्थित है तथा सडक एवं रेल मार्ग से जुडा हुआ है। दौसा जिले की सीमाएं जयपुर, सवाई माधोपुर, टोंक, करौली, भरतपुर, अलवर जिलों की सीमाओं से मिली हुई है।

दौसा में त्योहारों के अवसरों पर एक अनूठे सांस्कृतिक और मानवीय एकता के दर्शन होते है। यहां विशेष रूप से बसन्त पंचमी का मेला, बीजासनी माता का मेला, गणगौर मेला एवं मेहन्दीपुर बालाजी का मेला आदि मेलों का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। दौसा जिले में प्राचीन महत्व की धरोहर आभानेरी, झाझीरामपुरा, भांडारेज की बावडियां एवं महल, संत सुंदरदास की दीक्षास्थली – गेटोलाव, पंच महादेव आदि प्रमुख दर्शनीय स्थल है।

जिले का प्रमुख व्यवसाय पशुपालन व कृषि है परन्तु अब यह धीरे–धीरे औद्योगिक प्रगति की ओर अग्रसर है। दौसा जिले के समीप सिकंदरा चौराहे से बालाजी मोड तक पत्थर की कलात्मक नक्काशी एवं मूर्ति बनाने का व्यवसाय किया जा रहा है जिसका निर्यात देश–विदेश में भी किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त महवा तहसील के बालाहेडी गांव में पीतल के कलात्मक बर्तन बनाने का कार्य एवं लवाण तहसील में विकसित दरी उद्योग अपनी कलात्मक बुनाई एवं रंगों की डिजाईन के लिए विश्व प्रसिद्व है।

दौसा जिला एक दृष्टि में

क्षेत्रफल एवं स्थिति			
क्षेत्रफल	3432 वर्ग किमी	जनसंख्या (जनगणना 2011 के अनुसार)	1634409

प्रशासनिक संरचना

1.	उपखण्ड	11
2.	तहसील	18
3.	उपतहसील	8
4.	पंचायत समितियां	12
5.	ग्राम पंचायत	276
6.	राजस्व ग्राम	1167
7.	आबाद ग्राम	1141
8.	गैर आबाद ग्राम	26
9.	नगर परिषद	2
10.	नगर पालिका	9
11.	भू.अ.नि.वृत संख्या	66
12.	पटवार मण्डल	263

पंचायत समिति सदस्य 216

1.	बांदीकुई	19
2.	दौसा	24
3.	लवाण	14
4.	लालसोट	27
5.	सिकराय	20
6.	महवा	24
7.	सिकंदरा	19
8.	बैजूपाडा	17
9.	बसवा	13
10.	रामगढ पचवारा	15
11.	मण्डावर	07
12.	नांगल राजावतान	17

जन प्रतिनिधियों व संस्थाओं का विवरण

1.	लोक सभा सदस्य	1
2.	विधान सभा सदस्य	5
3.	जिला परिषद सदस्य	29

ग्राम पंचायतें 276

1.	बांदीकुई	26
2.	दौसा	31
3.	लवाण	14
4.	लालसोट	34
5.	सिकराय	26
6.	महवा	32
7.	सिकन्दरा	24
8.	बैजूपाडा	17
9.	बसवा	17
10.	रामगढ पचवारा	24
11.	नांगल राजावतान	19
12.	मण्डावर	12

नगर निकाय वार्ड 326

1.	नगर परिषद, दौसा	55
2.	नगर परिषद, लालसोट	35
3.	नगर पालिका, बांदीकुई	40
4.	नगर पालिका, बसवा	31
5.	नगर पालिका, महवा	25
6.	नगर पालिका, मण्डावर	25
7.	नगर पालिका, मण्डावरी	20
8.	नगर पालिका, रामगढ पचवारा	15
9.	नगर पालिका, लवाण	21
10.	नगर पालिका, भांडारेज	39
11.	नगर पालिका, सिकराय	20

पंच गौरव कार्यक्रम

संक्षिप्त परिचय

पंच गौरव कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण –

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियॉ है। इस कारण यहां अलग–अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियॉ पाई जाती है। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न जिलों में अलग–अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औघोगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाये जाते है।इसके साथ ही राज्य में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य भी कई जिलों में किया जाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी राज्य के प्रत्येक जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्य जीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद है। राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियॉ भी जिलों की प्रमुख पहचान रही है।

जिले के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/ स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी गई है।

दौसा जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढोतरी कर जिले के सर्वांगीण विकास हेतु जिले में "पंच– गौरव" कार्यक्रम शुरू किया गया है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत दौसा जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए **"पंच –गौरव" के रूप में जिले में एक जिला – एक उत्पाद स्टोन आर्टिकल, एक जिला – एक उपज सौफ, एक जिला – एक वनस्पति ढाक, एक जिला – एक खेल फुटबाल, एवं एक जिला– एक पर्यटन मेहन्दीपुर बालाजी चिन्हित किये गए** है।

कार्यक्रम के उद्धेश्यः–

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण एवं संवर्धन।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवत्ता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढाकर जिलों से प्रवास को रोकना।
- जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

पंच गौरव कार्यक्रम हेतु गठित जिला स्तरीय समन्वय समिति

पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के जिला स्तर पर प्रभावी संचालन हेतु निम्नानुसार समिति का गठन किया गया है।

जिला स्तरीय समन्वय समिति

क्र.सं	पद	समिति पद
1	जिला कलक्टर, दौसा	अध्यक्ष
2	उप वन संरक्षक, दौसा	सदस्य
3	मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद दौसा	आमंत्रित सदस्य
4	अतिरिक्त जिला कलक्टर, दौसा	आमंत्रित सदस्य
5	महाप्रबन्धक जिला उद्योग केन्द्र दौसा	सदस्य
6	संयुक्त निदेशक, कृषि विस्तार, दौसा	सदस्य
7	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, दौसा	आमंत्रित सदस्य
8	संयुक्त निदेशक, सूचना प्रौद्योगिकी एव सचार विभाग दौसा	सदस्य
9	उपनिदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, दौसा	सदस्य
10	उपनिदेशक, पर्यटन विभाग, जयपुर	सदस्य
11	सहायक निदेशक, उद्यान विभाग दौसा	सदस्य
12	जिला खेल अधिकारी दौसा	सदस्य
13	श्री लक्ष्मीकांत शर्मा अति. कोषाधिकारी दौसा	सदस्य
14	उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी कलक्ट्रेट, दौसा।	सदस्य सचिव

जिला स्तरीय समिति के कार्यः–

- जिला स्तर पर चिन्हीत पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
- पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्य योजना एवं जिलें में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यो पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन।
- कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा।
- पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार–प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।
- पंच गौरव–जिला पुस्तिका तैयार करना।

समिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक बार आयोजित की जाएगी।

उक्त समिति द्वारा पंच गौरव कार्यक्रम के तहत दिनांक 18.02.2025 को बैठक का आयोजन कर संबंधित विभागों से पंच गौरव के संवर्द्धन,संरक्षण एवं विकास हेतु प्राप्त विभिन्न प्रस्तावों का अनुमोदन कर आगामी कार्ययोजना को राज्य स्तर पर प्रेषित कर दिया गया है।

पंच–गौरव

एक जिला–एक उत्पाद

पत्थर के उत्पाद (स्टोन आर्टिकल)

संबंधित विभागः–जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, दौसा

नोडल अधिकारीः–श्री मेघराज मीना, महाप्रबंधक,जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र,दौसा।

संक्षिप्त परिचय :– दौसा जिले के मध्य से बीकानेर–आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरता है। इसी राष्ट्रीय राजमार्ग पर जिले के सिकन्दरा कस्बे में कुछ लोगों ने पत्थर पर नक्काशी का कार्य लगभग 30–35 वर्षों पूर्व आरम्भ किया था। पत्थर पर नक्काशी पूर्ण मनमोहक आकृतियाँ, राष्ट्रीय राजमार्ग से गुजरने वाले लोगों को बरबस ही आकर्षित करती है। जिले में आभानेरी और मेहन्दीपुर बालाजी में आने वाले पर्यटकों के लिए भी ये स्टोन आर्टिकल्स आकर्षण का केन्द्र बनने लगे हैं। धीरे–धीरे इनकी माँग बढ़ने लगी और यह स्टोन आर्टिकल प्रदेश व देश में ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाने लगा है। आर्टिकल्स की मांग बढ़ने के कारण यहाँ पर स्थापित इकाईयों की संख्या बढ़ने लगी है साथ ही इकाईयों द्वारा आर्टिकल्स की उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जाने लगा है।

जिले में उपलब्धियाँः–दौसा जिले में स्टोन आर्टिकल के संचालित उद्योग मुख्यतः सिकन्दरा क्षेत्र में एवं उसके आस–पास के क्षेत्रों में स्थापित है। वर्तमान में स्टोन आर्टिकल की इकाईयाँ मानपुर क्षेत्र व कोलाना औद्योगिक क्षेत्र में भी विस्तारित हो रही है। स्टोन आर्टिकल उद्यमियों द्वारा अपनी इकाईयों को राष्ट्रीय राजमार्ग आगरा–बीकानेर के समीप स्थापित करने के कारण जिला दौसा पर्यटकों का आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। उक्त उद्यमियों के विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा बजट 2024–25 में स्टोन मण्डी की घोषणा की गई है, जिसका प्रस्ताव रीको लि. दौसा द्वारा तैयार करवाकर भिजवाया जा चुका है। जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, द्वारा लगभग 100 इकाईयों को विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के माध्यम से बैंक द्वारा ऋण उपलब्ध कराया जा चुका है।

वर्तमान स्थितिः–

राजस्थान के दौसा जिले की सिकन्दरा तहसील की पत्थर नक्काशी को लेकर अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बन चुकी है। सिकन्दरा आगरा–जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित एक छोटा सा कस्बा है। यहाँ के शिल्पकारों द्वारा बनाई गई पत्थर की शिल्प आकृतियाँ पर्यटकों को बरबस ही आकर्षित करती है। जिले की सिकन्दरा तहसील स्टोन बाजार के रूप में विकसित है। जिसने देश में अब तक हुए सभी स्टोन मार्टस में देश विदेश के शिल्पकारों की कलाकृतियों

को पीछे छोड़ा है। सिकन्दरा में 35 साल से यह कार्य किया जा रहा है। इस कारोबार में लगभग 3 हजार लोगों को रोजगार प्राप्त है, तथा 300 इकाईयाँ वर्तमान में कार्यरत हैं। ग्वालियर, सरमथुरा, करौली, बंशी पहाड़पुरा सहित अन्य स्थानों से पत्थर सिकन्दरा लाया जाता है। शिल्पकारों द्वारा इन पत्थरों पर सुन्दर नक्काशी की जाती है। जिनमें मन्दिर मूर्तियाँ, पिल्लर, जाली, झरोखे और गमले व सजावटी आर्टिकल आदि तैयार किये जाते है। सिकन्दरा के स्टोन आर्टिकल कि मांग राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निरन्तर बढ़ रही है। शिल्पकार पत्थर पर नक्काशी कर उसे मूर्त रूप प्रदान करते हैं। सिकन्दरा में तैयार की जाने वाले स्टोन आर्टिकल का नक्काशी देश के बड़े शहरों एवं अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, इटली, संयुक्त अरब अमिरात, सउदी अरब के प्रमुख इमारतों में सजावटी सामान के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है।

पंच–गौरव

एक जिला एक उपज

सौंफ

संबंधित विभाग – कृषि एवं उद्यान विभाग दौसा

नोडल अधिकारी – श्री जगदीश प्रसाद मीना, उप निदेशक उद्यान, दौसा

संक्षिप्त परिचय – सौंफ बीजीय मसाले की एक महत्वपूर्ण फसल है। इसका वैज्ञानिकी नाम **फीनिक्युलम वल्गरे** (*Foeniculum vulgare*) है। दौसा जिले में लगभग 500 से 700 हैक्टेयर क्षेत्र में सौंफ फसल की खेती की जाती है जो लालसोट, निर्झरना, रामगढ पचवारा, राहुवास, नांगल राजावतान, कुण्डल तहसील के कुछ गांवो में कृषको द्वारा की जा रही है। सौंफ शरद ऋतु मे ंबोयी जाने वाली फसल है जो लगभग 140–150 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। शरद ऋतु में सौंफ फूल आने के समय पाले से प्रभावित होती है इसलिए इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस फसल को अप्रेल से 15 मई में अतिरिक्त सिंचाई की आवश्यकता रहती है। जिले में सौफ फसल का औसत उत्पादन 7–8 क्विटल प्रति हैक्टेयर होता है तथा बाजार भाव लगभग 5000 से 10000 रू प्रति क्विटल है। सौंफ में पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नेशियम, आयरन व फास्फोरस तत्व अधिक

मात्रा में पाया जाता है। सौंफ के बीज या पीसकर विभिन्न खाद्य प्रदार्थो जैसे सूप, आचार, सौस, चाकलेट इत्यादि को सुंगन्धित व रूचिकर बनाने के रूप में उपयोग किया जाता है तथा औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। सौंफ में पाचक व वायुनाशक गुण पाया जाता है जिससे पाचन शक्ति बढती है व कोलेस्ट्रोल की मात्रा को नियंत्रण करती है। जिले के लिए सौंफ एक बीजीय मसालो की उपयुक्त फसल है।

जिले में उपलब्धिः–

दौसा जिले में लगभग 500 से 700 हैक्टेयर क्षेत्र में सौंफ फसल की खेती की जाती है जो लालसोट, निर्झरना, रामगढ पचवारा, राहुवास, नांगल राजावतान, कुण्डल तहसील के कुछ गांवो में कृषको द्वारा की जा रही है।

वर्तमान स्थिति :–

जिले में सौंफ की कटाई उपरान्त ग्रेडिंग एवं पैकेजिग इकाई कार्यरत नही है जिससे कृषको को कटाई उपरान्त फसल का उचित मूल्य प्राप्त नही होता है। साथ ही साथ कृषको को कीट रोग की जानकारी नही होने से उपज में काफी नुकसान का सामना करना पडता है। अतः सौंफ की उन्नत किस्मो, पौषक तत्व प्रबन्धक, कीट एवं रोग नियंत्रण की जानकारी दी जानी अति आवश्यक है जिससे उत्पादन लागत कम कर कृषको की आय में वृद्धि की जा सकें।

पंच–गौरव

एक जिला एक वनस्पति

ढाक

संबंधित विभाग – वन विभाग एवं जिला परिषद दौसा

संक्षिप्त परिचयः–

- ढ़ाक मुख्यतः पानी बहाव वाले नालों के आस–पास एवं पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाने वाली प्रमुख प्रजाति है। जिसका प्राकृतिक महत्व के साथ–साथ स्थानीय लोगो के लिए उपयोगिता का भी महत्व है। इसका वानस्पतिक नाम– Butea monosperma है।
- दौसा जिले में ढ़ाक प्रजाति प्रमुखतः नांगल राजावतान तहसील के खवारावजी–सर्, सिकराय तहसील के मोरोली–लांका एवं लालसोट तहसील के घाटा, धौण आदि क्षेत्रों में पाया जाता है।
- प्राचीन काल में ढ़ाक के पत्तों का उपयोग पत्तल–दोने बनाने में किया जाता था जिसका प्रचलन पूर्वी राजस्थान के क्षेत्रों में बहुतायात में रहा है। ढ़ाक के पत्तों का उपयोग मवेशियों के लिए भी किया जाता है जिससे दूध की उत्पादकता मे वृद्धि होती है। आज भी ढ़ाक के फूलों को सुखाकर प्राकृतिक हर्बल गुलाल बनायी जाती है। ढ़ाक से प्राप्त होने वाले गोंद को स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद मानते हुए इसका मानव शरीर के लिए आयुर्वेदिक रूप में भी बहुत महत्व है। ढ़ाक से प्राप्त होने वाली लकड़ियां हल्की एवं मजबूत होने के कारण सूखी लकड़ियों का उपयोग गुणवतायुक्त ईंधन के रूप में भी किया जाता है। फरवरी– मार्च के महीनों में बसन्त के मौसम में ढ़ाक के फूल लगते है जो कि हल्के गुलाबी–लाल रंग के होते है। बहुतायत में मौजूद ढ़ाक के पेड़ो पर लगे फूल सौन्दर्य का अलग ही अनुभव देते है। दूर से देखने पर ऐसा लगता है मानो जंगल में आग लगी हुई हो, इसी कारण इसे जंगल की आग भी कहा जाता है। अलग–अलग स्थानों पर इसे विभिन्न उपनामों से जाना जाता है तथा क्षेत्र विशेष में ढ़ाक के उत्पादों से स्थानीय लोग लघु उद्योग भी संचालित करते है। इस प्रकार इस प्रजाति की विविधताओं व उपयोगिता को मध्य नजर रखते हुए ही इस वृक्ष को दौसा जिले के जिला वृक्ष के रूप में चयनित किया गया है।

वर्तमान स्थितिः–

इस प्रजाति को पहाड़ी क्षेत्रो में वृक्षारोपण/बीजारोपण एवं पानी बहाव वाले क्षेत्रों में वृक्षारोपण के लिए अच्छी प्रजाति के रूप में माना जाता है। ढाक से प्राप्त होने वाले उत्पादों को स्थानीय लोगो, समुदायों को लघु वन उपज के रूप में भी उपयोग लिए जाने की महत्वता एवं प्रसिद्धी के कारण अच्छी प्रजाति के रूप में माना जाता है। इसकी उपयोगिता एवं आवश्यकता को मध्य नजर रखते हुए राज्य सरकार की विभिन्न योजनान्तर्गत जिले में छीला प्रजाति के पौधे तैयार कर आम जन को वितरित किये गये है एवं विगत वर्षों में वृक्षारोपण क्षेत्रों में छीला का अधिकाधिक पौधारोपण व बीजारोपण करवाया गया है।

पंच गौरव ढाक की प्रस्तावित आगामी कार्ययोजना

विस्तृत परियोजना प्रतिवेदनः–

1. परियोजना का उद्धेश्यः– जिला दौसा में ढाक/पलास/छीला के वृक्षों का वृक्षारोपण विभिन्न ब्लॉक में ग्राम पंचायत में उपलब्ध चारागाह भूमि के उपर्युक्त भू–भाग क्षेत्रफल 6 हैक्टेयर में 3750 पौधे 4x4 मीटर अन्तराल पर सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पादित किया जाना है।
2. कार्यस्थल का चयनः– स्थल का चयन, मिट्टी की गुणवत्ता,भौतिक विशेषता व स्थानीय जलवायु के आधार पर किया जाना है।
3. सम्पादित की जाने वाली गतिविधियॉः–
    - परिसर का पशु सुरक्षा हेतु फेसिंग कार्य
    - प्रवेश द्वार
    - वृक्षारोपण कार्य
    - ट्यूबवेल व सोलर सिस्टम
    - वितरण टंकी निर्माण
    - गार्ड/स्टोर रूम
    - ड्रिप सिंचाई प्रबंधन व अन्य विविध कार्य
    - विशेष परिस्थितियों में पेड–पौधों को पानी देने के लिये वर्ष में दो बार अतिरिक्त पानी देने का प्रावधान लिया गया है।

4. **तकनीकी प्रतिवेदनः–**

    दौसा जिले में ढाक/पलास/छीला के वृक्षों का वृक्षारोपण विभिन्न ब्लॉक में 5 स्थान चिन्हित कर उसमें प्रत्येक में 6 हैक्टेयर उपर्युक्त भू–भाग का चयन कर वायर फेसिंग करवाकर उसमें ट्यूबवेल मय सोलर प्लांट की स्थापना कर ड्रिप सिंचाई प्रबंधन की व्यवस्था कर चिन्हित क्षेत्र में (3750 प्रत्येक) वृक्षारोपण किया जाना है,जिनका अंतराल 4x4 मीटर होगा व इसकी सुरक्षा एवं रख रखाव हेतु नोर्म्स अनुसार 3 वर्ष के लिये गार्ड मय रूम,आवश्यक दवा खाद,निराई,गुढाई का कार्य किया जाएगा। इससे क्षेत्र का पर्यावरण सुधार व अतिरिक्त आय एवं रोजगार के अवसर प्रदान किये जाएंगे।

पंच–गौरव

एक जिला–एक खेल

फुटबॉल

- **संबंधित विभाग –** युवा मामले एवं खेल विभाग, जिला खेल अधिकारी, जिला खेल प्रशिक्षण केन्द्र, श्री राजेश पायलट स्टेडियम, दौसा राजस्थान।
- **नोडल अधिकारी –** श्री गजेन्द्र शर्मा खेल अधिकारी, दौसा।
- **संक्षिप्त परिचय–** दौसा जिले में फुटबॉल खेल का समृद्ध इतिहास रहा है। दौसा जिले के युवाओं में गति कौशल एवं शारीरिक कद–काठी, क्षमता की अनुकूलता को देखते हुए फुटबाल खेल हेतु खिलाड़ी भी बहुतायत मे उपलब्ध है। नियमित प्रशिक्षण एवं इस खेल हेतु आवश्यक आधारभूत ढांचा उपलब्ध होने से खिलाड़ियों की व्यक्तिगत खेल कौशल क्षमता में वृद्धि हो रही है, जिससे उनके प्रदर्शन में निरंतर सुधार हो रहा है। दौसा जिले के खिलाड़ियों ने कई राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है एवं मैडल प्राप्त किया है। जिले में प्रतिवर्ष विद्यालय स्तरीय एवं दौसा फुटबॉल संघ द्वारा भी फुटबॉल खेल प्रतियोगतिओं का आयोजन होता है।

जिले में उपलब्धि

- जिले मे प्रतिवर्ष ऑल इंडिया फुटबॉल प्रतियोगिता आयोजित की जाती है जिसमें अंतराष्ट्रीय टीमें हिस्सा लेती है।
- यहां के खिलाड़ी राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले चुके है।
- जिलें में 50 से अधिक राष्ट्रीय स्तर व संतोष ट्रॉफी खेल चुके है। प्रतिवर्ष जिले से राज्य स्तरीय व राष्ट्रीय स्तर पर खिलाड़ी खेलने जाते है।
- जिले के खिलाड़ी खेल प्रशिक्षक, शारीरिक शिक्षक के रूप में शिक्षा विभाग में अपनी सेवाए दे रहे है।

जिले में उपलब्ध फुटबॉल स्टेडियम, ट्रेनिंग सेंटर, एवं ग्रास ग्राउण्ड

- यहां पर राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद द्वारा लगाये गये अल्पकालीक प्रशिक्षक द्वारा खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दिया जाता है। राजेश पायलट स्टेडियम मे फुटबॉल मैदान विकसित करने जा रहे है। इसमें आधुनिक प्रशिक्षण के साथ–साथ आधुनिक खेल उपकरण उपलब्ध कराये जाएगें।

- **स्कूल एवं कॉलेजो में खेलो का महत्व :** स्कूल एवं कालेजो के छात्र–छात्राओं को खेल की जानकारी एवं आगामी प्रतियोगिता के आयोजन संबधित जानकारी से अवगत करवाया जाएगा तथा खेलो में कैरियर को आगे बढ़ाने में क्या महत्व है इसके बारे में जानकारी दी जाएगी। राज्य सरकार द्वारा खेल कोटा में उत्कृष्ट खिलाड़ी को 2 प्रतिशत नौकरी एवं आउट ऑफ टर्म पॉलिसी की भी जानकारी दी जाएगी।

- **खिलाड़ियो को उचित प्रशिक्षण एवं उपकरण उपलब्ध करवाना :**

  खेल कार्यालय के माध्यम से फुटबॉल किट उपलब्ध कराया जाएगा एवं नियमित प्रशिक्षण दिया जाएगा। खिलाड़ियो के कौशल विकास हेतु आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराये जाएगे।

- **खेलो से संबधित ऑनलाइन जानकारी :**

  खिलाड़ियों को मिलने वाली सुविधाओं एवं सहायताओं की जानकारी खेल कार्यालय के माध्यम से ऑनलाइन और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर समय–समय पर उपलब्ध करवायी जाएगी।

- **आवास और पौषण संबंधी सहायता :**

  खिलाड़ियों को डे बॉर्डिंग स्कीम के तहत प्रशिक्षण दिया जाएगा।

दौसा जिले में एक जिला एक खेल में फुटबॉल को गौरव के रूप में स्थापित होने पर व्यापक रूप से इस खेल का जिले में प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर प्रचार–प्रसार हो सकेगा । जिले में ग्रमीण एवं शहरी क्षेत्रों में इस खेल की अभूतपूर्व प्रतिभाए उपलब्ध है। प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर फुटबॉल खेल मैदान, खेल सामग्री एवं खेल प्रशिक्षक जैसे वर्ल्ड क्लास, इन्फ्रास्टक्चर का निर्माण होना तथा दौसा जिले के खिलाड़ी वर्ष पर्यन्त नियमित प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए राज्य, राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर दौसा जिले एवं राज्य तथा राष्ट्र का नाम रोशन करेंगें। इस प्रकार दौसा जिले की प्रत्येक प्रतिभा को पूर्ण रूप से तराशा जा सकेगा एवं दौसा जिले के अधिक से अधिक खिलाडी अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन कर सकेगे।

पंच–गौरव

एक जिला–एक पर्यटन स्थल

मेहंदीपुर बालाजी मंदिर, दौसा

1. **संक्षिप्त परिचयः–** मेहन्दीपुर बालाजी का मन्दिर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–11 पर दौसा से 40 कि.मी. पूर्व में स्थित है। सुरम्य पहाड़ियों से घिरा हुआ यह तीर्थ स्थल दौसा जिले का गौरव है। भक्तों के साथ सैलानियों को भी आकर्षित करने की इस स्थल में अदभुत क्षमता है। यहॉ पर काफी संख्या में देशी–विदेशी पर्यटक वर्षपर्यन्त दर्शनार्थी के रुप में आते है।
2. **वर्तमान स्थितिः–** पूर्व में पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की स्वदेश दर्शन योजना के अन्तर्गत आध्यत्मिक सर्किट के तहत मेहन्दीपुर बालाजी हेतु राशि रू. 17.96 करोड़ के विकास कार्य स्वीकृत किए गए थे। उक्त राशि से मेहन्दीपुर बालाजी में आने वाले पर्यटकों/दर्शनार्थियों की सुविधा हेतु निम्न परिसम्पत्तियां/सुविधाएं निर्मित की गयी है।

(i). **तीर्थयात्री विश्राम भवन :** भवन भूतल व प्रथम तल पर बना है। जिसमें पुरूष एवं महिलाओं के लिए अलग–अलग डोरमेटरी मय अलग–अलग प्रसाधन सुविधा सहित निर्मित किए गए है। एक प्रतीक्षालय मय प्रसाधन सुविधा सहित एवं कैफेटेरिया निर्मित किया गया है। प्रथम तल पर एक हॉल है। इसमें भी पुरूष एवं महिलाओं के लिये अलग प्रसाधन सुविधा है। आने वाले यात्रियों के वाहनों के लिए पर्यटन पार्किंग का निर्माण किया गया है।

(ii). **तीर्थयात्री प्रतीक्षालय भवन :** तीन तल भवन बेसमेन्ट, भूतल एवं प्रथम तल निर्मित है। बेसमेन्ट एवं भूतल में विश्राम स्थल बने है जिसमें पुरूष एवं महिलाओं के लिए पृथक–पृथक प्रसाधन सुविधाएं हैं। भूतल एवं प्रथम तल पर कुल 7 कियोस्क बनाये गये ताकि यात्रियों को छोटी–मोटी आवश्यक वस्तुऐं चाय–पानी इत्यादि की सुविधा मिल सके। इसके अतिरिक्त ए.टी.एम. कक्ष बनाया गया, जिसको किसी बैंक से सम्बद्ध कर चलाया जा सकेगा। प्रथम तल पर भी यात्रियों को रूकने हेतु 02 बड़े एवं 01 छोटा हॉल है एवं प्रसाधन सुविधा अलग–अलग उपलब्ध है। इस भवन के बाहर बहुत बडी पार्किंग कारों व बसों के लिए निर्मित की गई है। लगभग 150 कार एवं 20–25 बसें पार्क हो सकती हैं।

2.1 दौसा में पंच–गौरव महेन्दीपुर बालाजी की स्थितिः– पर्यटकों हेतु पीने के पानी एवं शौच की सुविधार्थ मंदिर में अनेक स्थानों पर वाटर कूलर मय आर.ओ. एवं टॉयलेट्स स्थापित है।

2.2 केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा संचालित पंच गौरव से सम्बन्धित योजनाओं को लिंक करनाः– परिवर्तित बजट घोषणा 2024–25 दिनांक 10.07.2024 को की गई विभिन्न घोषणा संख्या 38.01 एवं 53.01 के द्वारा श्री मेहन्दीपुर बालाजी मंदिर हेतु राशि रू 135.00 लाख के कार्यो कि वित्त विभाग द्वारा दिनांक 24.12.2024 सैद्वांतिक सहमति प्रदान कि गई है जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य क्लॉक रूम, शू रूम, हाई–मास्क लाईट, शेट वर्क, ट्यूबवेल एवं वाटर टैंक आदि करवाये जाने है।

3. सोशल मीडिया, वेबसाईट और पर्यटन अभियान चलाकर पर्यटन स्थल का प्रचार और मार्केटिंग करने हेतु कार्ययोजनाः– विभाग द्वारा मेहन्दीपुर बालाजी मंदिर का सोशल मीडिया, वेबसाईट और पर्यटन अभियान चलाकर पर्यटन स्थल का प्रचार और मार्केटिंग करने का कार्य किया जा रहा है।

4. सम्बन्धित विभाग के नोडल अधिकारी

4.1 नोडल अधिकारी का नामः–श्री उपेन्द्र सिंह शेखावत,उप निदेशक, पर्यटन (मोबाईल न0, 9414152862)

4.2 उप नोडल अधिकारी का नामः– श्री बाबूलाल मीणा, पर्यटक अधिकारी, पर्यटक स्वागत केन्द्र, जयपुर (मोबाईल न0, 9529163816)

प्रस्तावित कार्ययोजना (सारांश)

क्र.सं	पंच गौरव का नाम	प्रस्तावित कार्य	अनुमानित लागत
1.	एक जिला–एक उत्पाद स्टोन आर्टिकल	●जिले में वर्तमान में संचालित 300 इकाइयों में कार्यरत 3000–3500 श्रमिकों को विशेष प्रशिक्षण उपलब्ध करवाया जाना जिससे कि सिलिकोसिस बीमारी से बचाव संभव हो सके। ●ऑनलाईन मॉर्केटिंग के लिये प्लेटफॉर्म का विकास किया जाना निर्यात प्रशिक्षण सेमिनार का आयोजन किया जाना। ●एक जिला एक उत्पाद के उत्पादकों को राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय मेले/प्रदर्शनियों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करना	100.00 लाख रूपये
2.	एक जिला – एक उपज सौफ	●जिले में लालसोट,निर्झरना, रामगढ पचवारा, राहुवास, नॉगल राजावतान, कुण्डल तहसीलों के कुछ गॉवों में 500 से 700 है। क्षेत्र में सौंफ की खेती की जाती है जिस हेतु निम्नानुसार कार्य योजना प्रस्तावित हैः– ●कटाई उपरांत प्रसंस्करण इकाई स्थापित किया जाना। ●कृषकों की अभिरूचि बढाने एवं उन्नत उद्यानिकी तकनीकी की जानकारी हेतु प्रशिक्षण आयोजित किया जाना । ●सौंफ फसल का क्षेत्र विस्तार लगभग 10–12 हजार हैक्टेयर एवं ग्रेडिंग पैकिंग इकाई स्थापित कर लोगो को रोजगार दिया जाना है।	90 लाख रूपये
3.	एक जिला – एक वनस्पति ढाक	●ढाक/पलास/छीला के वृक्षों का वृक्षारोपण विभिन्न ब्लॉक में 5 स्थानों का चयन कर उनमें प्रत्येक में 6 हैक्टेयर में 3750 पौधो का वृक्षारोपण किया जाना। ●परिसर का पशु सुरक्षा हेतु फेसिंग कार्य, प्रवेश द्वार ●ट्यूबवेल व सोलर सिस्टम एवं टंकी निर्माण ●ड्रिप सिंचाई प्रबंधन	मनरेगा कार्यक्रम से 22.76 लाख पंच गौरव कार्यक्रम से 20 लाख
4.	एक जिला – एक खेल फुटबाल	●जिला स्तर पर योग्यताधारी दो (०२) खेल प्रक्षिशको की नियुक्ति एवं ब्लॉक स्तर पर खेल प्रक्षिशको कि	164.24 लाख रूपये

		नियुक्ति। ● ब्लॉक/ जिला स्तर पर फुटबाल खेल मैदानों का निर्माण एवं खेल उपकरण क्रय किया जाना । ● खेल आयोजन ब्लॉक व जिला स्तर पर । ● स्थानीय भामाशाह एवं खेल संघ द्वारा एवं MP/MLA फंड्स। ● स्वयंसेवी संस्था एवं खेल प्रेमियों द्वारा सहयोग। ● प्रत्येक वर्ष फुटबाल प्रीमियर लिंग के आयोजन हेतु जिले कि टीमो के अलावा बाहर की टीमो को बुलाकर आयोजन । ● मैदान में रख रखाव एवं सुरक्षा के लिए गार्ड कि नियुक्ति ।	
5.	एक जिला– एक पर्यटन मेहन्दीपुर बालाजी	● पूर्व में पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की स्वदेश दर्शन योजना के अन्तर्गत आध्यत्मिक सर्किट के तहत मेहन्दीपुर बालाजी हेतु राशि रू. 17.96 करोड़ के विकास कार्य स्वीकृत किए गए थे। उक्त राशि से मेहन्दीपुर बालाजी में आने वाले पर्यटकों/दर्शनार्थियों की सुविधा हेतु निम्न परिसम्पत्तियां/सुविधाएं निर्मित की गयी है। ● मेहन्दीपुर बालाजी मंदिर मे पूजा–पाठ हेतु हवन वैदिक का निर्माण । ● दर्शनार्थियों हेतु विश्राम सिल जिसमें शेड एवं बैठने हेतु बैंच (लगभग 20–30) लगाया जाना है। ● शुद्व पीने के पानी की व्यवस्था के तहत वाटर हट एवं आरओं मशीन लगवाने । ● महिला/पुरूषों हेतु शौचालय का निर्माण । ● दर्शनार्थियों की सुविधा हेतु रोशनी एवं पंखे आदि की व्यवस्था करना ।	75 लाख रूपये